ISSN: 2583-5149 | Vol. 2, Issue. 2 |December 2022 | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में कठपुतली कला का प्रयोग : एक समीक्षात्मक अध्ययन

देश दीपक शोध छात्र,
शिक्षा संकाय दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा, उ०प्र०
डॉ० नेहा जैन असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा, उ०प्र०

Received: 20 December 2022 | Accepted: 25 December 2022 | Published: 31 December

शोध सारांश

शिक्षा जीवन का आधार है बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन अर्थहीन और दिशाहीन हो जाता है ।एक सफल जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व होता है। इसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन में सही दिशा में अग्रसर होते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को जो भी पढ़ाया जाए वह अर्थपूर्ण और रुचिकर हो जिससे विद्यार्थी शिक्षा को अपने जन -जीवन में प्रयोग कर सकें। इसी प्रत्यय को ध्यान में रखते हुए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कला प्रदर्शन का प्रयोग कर पढ़ाया जा सकता है। इसके अंतर्गतनृत्य, संगीत, नाटकशाला, नाटक, अभिनय, संगीत नाटकशाला, दृश्य कला, फिल्म बनाना, फिल्म, चित्रपट लेखन, इतिहास नृत्य, थिएटर का इतिहास आदि सम्मिलित हैं। इन्हीं कलाओं में से एक कठपुतली कला है, जिसका प्रयोग कर सामाजिक विज्ञान शिक्षण किया जा सकता है। जिससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि जागृत होगी, और वह ज्ञान का अर्जन जीवंत व मनोरंजक पूर्वक कर सकते हैं। तारजा क्रोगर, एनी- मैरी (2019) के अनुसार कठपुतलियों के उपयोग से रचनात्मकता, सकारात्मक कक्षा वातावरण, समूह में सहयोग और एकीकरण को बढ़ावा मिलता है। रेमर, रोनित, तजुरिल डेविड (2015) के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि किंडरगार्डन शिक्षण में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कठपुतली कला का उपयोग उन बच्चों के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध बनाने में सफल रहा था। साहित्य का सर्वेक्षण करने के उपरांत ज्ञात हुआ, कि कठपुतली कला का प्रयोग प्राथमिक स्तर के शिक्षण में अधिक हुआ है और कठपुतली का प्रयोग कर पढ़ाने से शिक्षण रुचिकर और प्रभावी रहा है। इसलिए उच्च

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग कर पढ़ाया जा सकता है यह विद्यार्थियों के लिए प्रभावी उपकरण साबित हो सकता है।

***मुख्य शब्द**: धागे वाली कठपुतली, छड़ी से बनी कठपुतली, दस्ताना कठपुतली, छाया कठपुतली, उच्च प्राथमिक स्तर, सामाजिक अध्ययन, शिक्षा*

1.प्रस्तावना

शिक्षा जीवन का आधार है, बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन अर्थहीन और दिशाहीन हो जाता है। एक सफल जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व होता है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन में सही दिशा में अग्रसर होते हैं। सही और गलत में अंतर कर पाते हैं। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही उसे अनुचित मार्ग से सद मार्ग पर लाया जा सकता है। अरस्तु के अनुसार "शिक्षा मनुष्य को समाज के सदस्य के रूप में सभी संघ कार्यों का पूर्ण रूप से प्रयोग करके अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण देने की प्रक्रिया है।" इसलिए आवश्यक है, कि विद्यार्थियों को समग्र विषयों की प्रभावी तरीके से शिक्षा प्रदान किया जाए।

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें बालक के अंदर उपस्थित अंतर्निहित शक्तियों को विकसित किया जाता है। एन. एल. गेज (1962) के अनुसार "शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है, जिसका उद्देश्य दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है। यह शिक्षा सही मायनों में तभी प्रभावी होगी जब विद्यार्थी उचित प्रकार से सीख सकेंगे।

लेकिन सामान्यतः देखा गया है, कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण में व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी नीरसता का परिचय देते हैं। इसलिए विद्यार्थियों की नीरसता को दूर करने के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग करके पढ़ाया जा सकता है। जिस विषय के अंतर्गत मानव के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक,एवं ऐतिहासिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है ,उसे सामाजिक विज्ञान कहा जाता है । इसके अंतर्गत पुरातात्विक खोजों, सामाजिक रीति-रिवाजों, जाति, धर्म, चुनाव प्रणालियां, यातायात कृषि, खनन इत्यादि विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्मिलित किया जाता है। माइकेलिस (1956) के अनुसार "सामाजिक विज्ञान विषय का संबंध मनुष्य और उसके सामाजिक और भौतिक वातावरण के साथ पारस्परिक क्रिया से है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग करके पढ़ाने से विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न हो सकती है, और शिक्षण को सरल, जीवंत, मनोरंजक तथा प्रभावी रूप प्रदान किया जा सकता कठपुतली नृत्य और लोक नाट्य की एक शैली माना गया है। लेपले के अनुसार (2005) कठपुतली छात्रों के लिए खुद को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है। कठपुतली कला अत्यंत प्राचीन नाटकीय

खेल है, जिसमें लकड़ी, धागे, प्लास्टिक या प्लास्टर की गुड़िया द्वारा जीवन के प्रसंगों की अभिव्यक्ति तथा मंचन किया जाता है। वर्तमान समय में कठपुतली कला शिक्षा की अधिकाधिक आवश्यकता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी को प्रभावी शिक्षा प्रदान की जा सकती है। कठपुतली कला की उत्पत्ति लगभग 4000 वर्ष पूर्व भारत में हुई थी। इसका उपयोग मानव समाज के विचारों और जरूरतों को संप्रेषित करने के लिए किया जाता था। 2000 ई. पू. के आसपास मिस्र में लकड़ी की कठपुतलियों के प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं। कठपुतली रंगमंच या प्रदर्शन का एक रूप है, जिसमें कठपुतली द्वारा हेरफेर शामिल है, जिसके अंतर्गत कठपुतलियों को एक मंच प्रदान किया जाता है और उस मंच के द्वारा अपनी प्रस्तुति दर्ज की जाती है। और कठपुतली कला के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है ,और लोगों तक पहुंचाया जाता है। यह एक तरीका है, लोगों तक अपने विचारों को मनोरंजन पूर्वक पहुंचाने का जिससे लोग विचारों को रुचि के साथ ग्रहण कर सकें। इसलिए आवश्यक है, कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण को जीवंत व मनोरंजक तथा रुचिकर बनाने के लिए शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग किया जा सकता है।

2. अध्ययन का औचित्य

सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति को उबाऊ माना जाता है। जिसे पढ़ते समय विद्यार्थी नीरसता का परिचय देते है। जिसके कारण वह सामाजिक विषय में अत्याधिक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करने और नीरसता को दूर करने के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण मैं कठपुतली कला का प्रयोग कर पढ़ाया जा सकता है। जिससे विद्यार्थियों को सरलता पूर्वक, जीवंत व मनोरंजक तरीकों से अधिगम कराया जा सकता है। कठपुतली कला शिक्षा एक मनोरंजनात्मक शिक्षा है। जिसके माध्यम से सामाजिक विज्ञान शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। और इसके माध्यम से विद्यार्थी को सक्रिय शिक्षार्थी बनाया जा सकता है। इसीलिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग करके पढ़ाया जा सकता है।

3. अध्ययन का महत्व

सामाजिक विज्ञान विषय ऐसा विषय है इसके अंतर्गत सामाजिक संबंधों का अध्ययन, समाज के कामकाज का अध्ययन, मानव निर्मित संस्थाओं एवं संगठनों का अध्ययन, युगों से मनुष्य के विकास का अध्ययन, मानवीय रिस्तों का अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन एवं विभिन्न विषयों का संयोजन जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र सम्मिलित है। इसलिए विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है, कि विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान शिक्षण कराते समय प्रयास किया जाए , कि वह सामाजिक विज्ञान शिक्षण को जीवंत मनोरंजक व रुचि पूर्वक पढ़ सकें। लेकिन विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ते समय नीरसता का परिचय देते हैं, जिसके कारण वह सामाजिक विज्ञान विषय का ज्ञान उचित प्रकार प्राप्त नहीं कर पाते है जिसके कारण विद्यार्थी सामाजिक संबंधों व समाज के कामकाज से भलीभांति परिचित नहीं हो पाते इसलिए

आवश्यक है, कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण करते समय ऐसे साधनों का प्रयोग कर अधिगम कराया जाए। जिससे विद्यार्थी जीवंत व मनोरंजक पूर्वक अधिगम प्राप्त कर सकें। इसके लिए हम कला प्रदर्शन का प्रयोग कर सकते हैं । कला प्रदर्शन के अंतर्गत संगीत, नृत्य और नाटक कला सम्मिलित हैं, इनका महत्व सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु अधिकाधिक है, क्योंकि छात्रों को नाटक खेल प्रदर्शन के साथ और भी उचित

प्रकार अधिगम कराया जा सकता है। इसलिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग करके पढ़ाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, आत्म अभिव्यक्ति, सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु सकारात्मक सोच का विकास, अधिगम के प्रति सक्रिय, तथा सहभागिता का विकास संभव हो सके।

4. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

तारजा क्रोगर, एनी- मैरी (2019) ने अपने "अध्ययन कठपुतली एक शैक्षिक उपकरण के रूप में: एक साहित्य समीक्षा" के अध्ययन की समीक्षा के निष्कर्ष से ज्ञात होता है, कि कठपुतलियों के 5 संभावित उपयोग क्या है, इन संभावित उपयोगों में शामिल है 1.संचार उत्पन्न करना 2.सकारात्मक कक्षा वातावरण का समर्थन करना 3.रचनात्मकता को बढ़ावा देना 4. एक समूह में सहयोग और एकीकरण को बढ़ावा देना। 5. तथा दृष्टिकोण बदलना।

मनीषाबेन रामजीभाई (2015) ने अपने अध्ययन "सामाजिक विज्ञान की इकाई के संदर्भ में कठपुतली पद्धति और चित्रात्मक कहानी पद्धति की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन" में पाया कि कठपुतली विधि और चित्रात्मक कहानी पद्धति क्षेत्र और लिंग के संदर्भ में समान रूप से प्रभावी पाई गई ।लेकिन चित्रात्मक कहानी पद्धति की प्रभावशीलता ग्रामीण क्षेत्र में अधिक पाई गई।

रेमर, रोनित, तजुरिल डेविड (2015) ने अपने अध्ययन में “कठपुतली के साथ बेहतर पढ़ाता हूं- किंडरगार्डन शिक्षा में मध्यस्थता उपकरण के रूप में कठपुतली का उपयोग एक मूल्यांकन" के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि किंडरगार्डन शिक्षण में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कठपुतली कला का उपयोग उन बच्चों के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध बनाने में सफल रहा था।

5. कठपुतली कला के उद्देश्य

5.1 कठपुतली कला को सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सहायता के रूप में प्रयोग करना।

5.2 शिक्षक -शिक्षार्थियों को भारत के पारंपरिक कठपुतली नाटकशास्त्र के रूपों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाना। और उन्हें पारंपरिक कठपुतली कलाकारों के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करना।

5.3 शिक्षकों को सस्ती शिक्षण सहायक सामग्री में सुधार करने और छात्रों के लिए रचनात्मक गतिविधियों को कक्षा शिक्षण का एक अभिन्न अंग बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

6. कठपुतली कला के प्रकार

6.1 धागे वाली कठपुतली

यह कठपुतलियां लचकदार होती है इनकी भुजाओ, पैरों और घुटनों में जोड़ होते हैं। यह कागज, कपड़ा, लकड़ी, चित्र तथा बुरादे से बनाई जाती है। कठपुतली के विभिन्न अंगों से धागे जुड़े रहते हैं इन धागों का नियंत्रण पर्दे के पीछे बैठा कलाकार करता है, जो अपने हस्तकौशल से कठपुतली को नचाता है।

6.2 दस्ताने वाली कठपुतली

कठपुतली कलाकार दस्ताने की तरह कठपुतली को अपने हाथ में पहनता है। कठपुतली के सिर तथा दोनों हाथ कलाकार के हाथों द्वारा संचालित होते हैं। कलाकार के हाथ तरह-तरह के रंगीन वस्त्रों से सजे रहते हैं ,जो कठपुतली के वस्त्रों का आभास कराते हैं। एक ही व्यक्ति दाएं एवं बांये हाथों में दो कठपुतलियों को एक साथ नचा सकता है। कठपुतली चालक स्वयं आवाज बदल- बदल कर दोनों कठपुतलियों से संवाद भी करता है।

6.3 छड़ी से बनी कठपुतली

ये कठपुतलियां छडी़ एवं कागजों से निर्मित होती हैं। कठपुतलियां आकार में बड़ी और लोहे की छड़ी के सहारे संचालित होती हैं। भारत में पश्चिम बंगाल में इन कठपुतलियों का प्रचलन है। जापान और यूरोपीय देशों में भी इनका प्रचलन है। इसको बनाना और चलाना बहुत सरल होता है ।

6.4 छाया कठपुतली

चमड़े, प्लास्टिक या टीन से निर्मित इन कठपुतलियों की छाया एक पर्दे पर डाली जाती है। यह कठपुतली भी छड़ी द्वारा नियंत्रित होती है। आंध्र , कर्नाटक और उड़ीसा में यह कठपुतली अधिक लोकप्रिय है।

7. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संबंध में कठपुतली कला के सिद्धांत

7.1 कठपुतली कला की कार्यवाही निम्न संवादों के साथ होनी चाहिए।
7.2 कठपुतली कला शो के अंतर्गत कई किरदार नहीं होने चाहिए ।
7.3 कठपुतली कला को कम अवधि के गीतों की सहायता से प्रयोग में लाना चाहिए।
7.4 कठपुतली कला में संगीत या रिकॉर्डर के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है।

7.5 कठपुतली के संवादों के मध्य थोड़ा ठहराव होना चाहिए।

8.सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला के प्रयोग

8.1 कठपुतली कला सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रभावी सुनने और देखने के कौशल विकसित कर सकता है।

8.2 कठपुतली कला सामाजिक विज्ञान शिक्षण में समूह सहयोग विकसित कर सकता है।

8.3 कठपुतली कला के द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण में आत्मविश्वास की भावना विकसित हो सकती है।

8.4 कठपुतली कला सामाजिक विज्ञान शिक्षण में रचनात्मक क्षमता को बढ़ा सकती है।

8.5 कठपुतली कला, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में आत्म अभिव्यक्ति को बढ़ावा दे सकती है।

9 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला की प्रयोग के लाभ

9.1 कठपुतली कला सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रतिभागी का ध्यान आकर्षित कर सकता है।

9.2 कठपुतली कला सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अधिगम के प्रति रुचि विकसित कर सकता है।

9.3 कठपुतली कला के द्वारा विद्यार्थी संक्षिप्त अवधि में अधिक सीख सकते हैं।

9.4 कठपुतली कला विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक संबंध बनाने में सहायता प्रदान कर सकता है।

9.5 कठपुतली कला के माध्यम से विद्यार्थियों में व्यवहारिक कौशल विकसित हो सकते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है, कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कठपुतली कला का प्रयोग करके पढ़ाने से विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि जागृत होगी। और विद्यार्थी जीवंत व मनोरंजक पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति उचित जानकारी व समझ विकसित हो सकेगी। और सामाजिक विज्ञान विषय के हर पहलू को समझने में आसानी होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्रोगर, टी. एंड नुप्पोनेन, ए. (2019). कठपुतली एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में: एक साहित्य समीक्षा। अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक जर्नल. 10.26822/iejee.2019450797

रामजीभाई। (2015)। सामाजिक विज्ञान की इकाई के संदर्भ में कठपुतली पद्धति और चित्रात्मक कहानी पद्धति की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, छठी कक्षा के हमारे न्यायालय नई, http://hdl.handle.net/10603/173843

सिंह, सी. (2016). शिक्षा में कला एवं सौंदर्यशास्त्र. ठाकुर पब्लिशर्स, लखनऊ.

रेमर, आर। त्ज़ुरियल, डी। (2015)। अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च। वीएल -3 "मैं

कठपुतली के साथ बेहतर सिखाता हूं" - किंडरगार्टन शिक्षा में मध्यस्थता उपकरण के रूप में कठपुतली का उपयोग - एक मूल्यांकन। 10.12691/education-3-3-15

लेप्ले, ए.एन. (2001)। कठपुतली भाषा के विकास में कठपुतली कैसे मदद करती है अल्पसंख्यक बालवाड़ी। एक शोध। ग्लेन वन प्राथमिक। फेयरफैक्स काउंटी पब्लिक स्कूल

https://sites.google.com/site/pedagogiayandragogia2016/teaching-vs-learning-strategies

http://paleeri.blogspot.com/2013/12/definitions-of-social-science-or-social.html

https://studypoints.blogspot.com/2015/02/define-education-or-different.html#:~:text=Aristotle%20%3A%20Education%20is%20the%20process,as%20a%20member%20of%20society